VOL- X | ISSUE- VI | JUNE | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

'रूको रूको, रामराज आ रहा है' स्वरूप एवं संदर्भ

डॉ. संतोष रोडे
सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग
प्रा.रामकृष्ण मोरे महाविद्यालय
(स्वायत) आकुर्डी ,पुणे

हिंदी साहित्य की विधाएँ कविता, कहानी उपन्यास की भॉति नाटक एक महत्वपूर्ण विधा है।नाटक का पहला जन्म लिखित रूप में होता है तो दूसरा जन्म मंचन के साथ पुर्ण होता है। इन विशेषताओं के कारण नाटककार जब नाटक लिखता है तो साहित्यिक उद्देश्यों की परिपूर्णता के साथ रंगमंचीयता को भी महत्व देता है। हिंदी साहित्य के आधुनिककाल के प्रवर्तक भारतेंन्दु ने नाटक विधा को सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। भारतेंन्दु हरिशचंद्र ने नाटक विधा को जीवन की वास्तविकता से जोडा तो द्विवेदी युगीन नाटककारो ने हिंदी नाटक को पहचान दी। आगे जयशंकर प्रसाद ने इतिहास की कथावस्तु को आधार बनाकर ऐतिहासिक पुरूष को रंगमंच पर साकार किया केवल तीन नाटक लिखकर मोहन राकेश हिंदी के श्रेष्ठ नाटककारों में गिने जाने लगे। मोहन राकेश ने हिंदी नाटक का विस्तृत फलक प्रदान किया अब हिंदी नाटक केवल हिंदी के ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य की अनमोल धरोहर बन गए। बावजूद इसके हिंदी का नाटक साहित्य अपूर्ण था क्योंकी हिंदी नाटको का विषय वर्ग विशेष तक सीमित था। सन 1960 के बाद भारतीय साहित्य में क्रांति की लहर दौडने लगी अब साहित्य के विषय दबे–कुचले, शोषित पीडित, अपमानित लोग बन गए। भारतीय साहित्य में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जो के विचारों को आदर्श मानकर साहित्य सृजन का सुत्रपात हुआ, जिसे दलित साहित्य के अंतर्गत बाबासाहेब के विचारों का प्रतिबिंब है। बाबासाहेब ने खुद 'दलित' शब्द से परहेज किया था। उनके विचारों को आधार बनाकर सृजन साहित्य को दलित साहित्य कैसे कहा जा सकता ? अतः बाबासाहेब जी को प्रेरणा मानकर जो साहित्य सृजन हो रहा उसे दलित साहित्य नही बल्कि आंबेडकरी साहित्य कहा जाना चाहिए।

हिंदी साहित्य में बाबासाहेब के विचारों को केंद्र में रखकर नाटक सृजन की परंपरा नुतन है मुलतः हिंदी का आंबेडकरी साहित्य मराठी से होकर आता है। आज की तिथि में हिंदी के आंबेडकरी साहित्य ने विशेष रूप ग्रहण किया है।

देश भर के विभिन्न प्रांतो के लोग साहित्य सृजन में रत है। मराठी तथा हिंदी नाटककारो ने आंबेडकरी विचारों को आधार बनाकर कई नाटक लिखे इस श्रृंखला में प्रकाश त्रिभुवन कृत 'रूको , रूको रामराज आ रहा है' महत्वपूर्ण नाटक है।

दलित साहित्य की जो कसोटी हैं, वह दलित नाटक को भी लागू होती है। दलित साहित्य में प्रस्थापित व्यवस्था का विरोध तथा समता, बंधुता यह स्थायी भाव दलित नाटक का भी रहा हैं। प्रकाश त्रिभुवन कृत नाटक मूलतः मराठी में लिखा गया नाटक है, स्वयं नाटककार ने यह नाटक हिंदी मे अनुदित किया नाटक में प्रथम सत्र में रावण, राक्षस, पटेल, आनंद यह प्रमुख पात्र है। नाटक का प्रमुख पात्र आनंद है, वह एम. ए. तक शिक्षा ग्रहण करता है। और दलित बस्ती में स्कूल खोलता है, तथा ज्ञान – दान का कार्य करता है की गॉव रामराव पटेल को यह बात रास नही आती, वे हनुमान रूपी प्रतीक को लंका जलाने का आदेश देते हे। उसके पहले स्कुल जलाने के लिए कहा जाता है।

आनंद जब, इस हांदसे की रपट पुलिस में लिखवाता है, तो उलटे पुलिस आनंद के खिलाफ

साजिश करती है। आनंद को झुठे इल्जाम में बदनाम करते है। पुलिस आनंद से कहती ''तुम कौन हो, मैं आनंद गॉव के दलितों में जागृती पैदा करने के लिए इस जलायी गई बस्ती में एक झोपडी में स्कुल चला रहा था सिर्फ स्कुल ? फिर उसे क्यों जलायेगें ? तुम स्कुल में क्या करते थे, मुझे तो अलग ही शंका हो रहा है तुम वहॉ पटेल के खिलाफ साजिश कर रहें होगें, आनंद कहता हैं गलत मैं हम सबसे कह रहा था, तुम सब इन्सान हो इन्सान का जिना जिओं अन्याय के विरूध्द लडना सिखों। अच्छा तो तुम उन्हें लडना सिखाते थे,गॉव में लडाई –झगडे लडवाने आते हो ? हरिजनों की बस्ती जलाने के लिए अब तुम्हे ही गिरफ्तार करना पडेगा।'' [1]

गॉव में प्राचीन काल से यह दशावतार की परम्परा है। पुलिस भी इस परम्परा को जतन करने की सलाह देती है। अन्यायी –आत्याचारी पुलिस भी पटेल का पक्ष लेती है और हरिजन आनंद के सामने मुश्किल निर्माण करते हैं जब आनंद पुलिस पटेल के पद के लिए अर्जी करता है, तब गॉव के मुखिया रामराव पटेल द्वारा दबाव डाला जाता है। इसके संदर्भ में पुलिस कहती हैं कितनी सहुलते है ? अब सरकार की नयी घोषणा है ? अब सरकार की नयी घोषणा सुनो इस गॉव में पिछडी जाति का आदमी पुलिस पटेल बनाया जाएगा । तुम में से आनंद अर्जी कर सकता है, इस संदर्भ में आनंद तथा, पुलिस के बीच हुआ वार्तालाप उल्लेखनिय है –

एक मैं भी ?
तुम कौन
एक मैं बौध्द

पुलिस बौध्द को सहुलियत नहीं हैं। आनंद क्यों ? बौध्द बन गए तो उनके सभी सवाल खत्म हुए ? बेरोजगारी, छुआछूत दूर हो गयी। पुलिस : तो फिर तुमने धर्मांतर क्यो किया। किसने बताया था तुम्हे धर्मांतर करने को ? हरिजन रहकर अर्जी करना तब ही यही संभव है नहीं तो नही यह सहुलियत सिर्फ हरिजन के लिए हैं।''[2]

'' गॉव के लोंगों को मारने पिटने की योजना बनाते हैं उसी समय सवर्णो द्वारा दलित बस्ती पर हमला , आग लगायी जाती हैं। आत्याचार किये जाते हैं। एक युवक को पकडते है मारते हैं। वह बेहोश हो जाता हैं, पानी पिलाकर उसे होश में लाया जाता है, उसे कहते हैं भाग वह जान की बाजी, लगाकर भागता हैं। उसका पिछा करके पकडते है, फिर मारते हैं पूछते हैं कहेगा जयभिम, वह कहता हैं, जयभिम कहते – कहते मर जाता है''[3]

इस घटना के बाद आनंद सभी दलित भाइयों को इकठ्ठा करता है, उनमें चेतना जगाता है, और मोर्चा का आयोजन करता है अन्यायी के खिलाफ प्रशासन पर हल्लाबोल करता है। ''समता मोरचा जिंदाबाद'' समता दिंडी जिंदाबाद, लॉगमार्च जिंदाबाद, दलित का पुलिस पटेल बनना चाहिए । आदि घोषणा करते है। पुलिस मोरचे को रोककर सभी को पकडकर ले जाती है।''[4]

''तुने पटेल पद के लिए अर्जी दी
आनंद : हॉ ?
पटेल : अरे तु इतना पढा लिखा हैं पटेलः क्या हमारे जैसे चार – बुक पढे लोग ही होते है। तु इतना लायक आदमी यह अंगुठा छाप काम करेगा ? और ऐसे खेडे में ? अरे तु शहर में जा, बडा आदमी बन अपने गॉव तथा अपने बाप का नाम रोशन कर।
आनंद : नहीं मै गॉव में रहकर ही दलितों में जागृती लाना चाहता हुॅ।
पटेल : तेरे शहर की नौकरी के लिए जो भी खर्चा होगा हम करेंगे, वसीला भी लगायेगें। हमारी उपर तक पहुॅच हैं पैसा कितना चाहिए बोल लेकिन अर्जी वापर ले ले !
आनंद : नही मै अर्जी वापस नहीं लुंगा !
पटेल : देख लेगें'' [5]

पटेल, आनंद को अपने घर चाय के लिए बुलाते है, और उनका मत परिवर्तन करने का प्रयास करते है, किंतु आनंद में कोई भी परिवर्तन नहीं होता आखिरकर आनंद के भाई का अपहरण किया जाता हैं। उसके बाद आनंद तथा तुका का संवाद महत्वपूर्ण है।

'' तुका : ए आनंद, पटेल ने कहा तुने अर्जी वापस लें ली तो तेरा भाई लौटेगा जरा भी होशियारी दिखायी तो तेरे भाई का नाखुन भी नही देख सकेगा'' [6]

इस बात से परेशान होकर आनंद अर्जी वापस लेता है। मॉ कहती है, तु पटेल बनेगा किस लिए गरिंबो की गरदन कॉटने ? या मॉ– बहनों की इज्जत लुटने ? मॉ मैं पटेल बन गया तो यह सब नहीं होगा। इसीलिए तो सरकार ने यह योजना बनायी !

''आनंद : बाबासाहेब ने हमें अन्याय के खिलाफ लडना सिखाया है। टूट जाऊंगा लेकिन झुकुंगा नहीं यह बाना था उनका मैं भी लडुंगा ।

तु लडेगा मगर मेरा बच्चा ?

बेवजह मरेगा ?

आनंद : उसे कुछ नहीं होगा। सरकार हैं ना हमारे साथ।

मॉ : मेरे बेटे को लौटाएगी सरकार ? ऐसे कितनों को लौटाया हैं। गरीबों का कोई नहीं होता? मेरे बेटे को बचा ले नही तो मैं जान दे दुॅगी।'' [7]

माता के विरोध के बाद आनंद अपनी अर्जी वापर लेता है, फिर से दलितों के हितों के लिए सतत कार्ये करता है, और वह कहता है कि अन्याय– आत्याचार के विरोध में लडना मेरा कार्य ही हैं।

पटेल उनके बिरादरी के लोंगो की जमीन छील लेते है तो नाना सरपंच आनंद के पास जाते है, और आपबिती सुनाते है, उनका संवाद देखिए।

''नाना : आनंदराव पटेल ने जबर्दस्ती मेरी जमीन छीन ली हैं, मैं तो पटेल की जाति का हुॅ, तुम करोगें मेरा काम ? दिलाओंगे मेरी जमीन वापस ? क्यों नहीं।

नाना : लेकिन मुझे लगा तुम तुम्हारी ही जाति का काम करोगं ?

आनंद :– ऐसा नही है, जो पिडित शोषित हैं वह सब मेरी जाति के हैं, जो गरीब हैं दुःखी है, वह सब मेरे हैं, मैं पहली ही बैठक मैं तुम्हारा प्रश्न रखुॅगा ठिक हैं?

नाना : हॉ, हॉ हम यही चाहते है,''[8]

अतः 'रूको – रूको रामराज आ रहा है, यह नाटक दलित चेतना से ओतप्रोत है। आनंद के माध्यम से समाज में रूढी परंपरा छुआछूत जातिप्रथा तोडने का प्रयास किया गया है। आंबेडकरी विचारधारा को ग्रहन करनेवाला क्रांतिकारी युवा है आनंद।

संदर्भ :–

1) प्रकाश त्रिभुवन – 'रूको रूको रामराज आ रहा है पृ. क्रं. 13
2) प्रकाश त्रिभुवन – 'रूको रूको रामराज आ रहा है पृ. क्रं. 14
3) प्रकाश त्रिभुवन – 'रूको रूको रामराज आ रहा है पृ. क्रं. 18
4) प्रकाश त्रिभुवन – 'रूको रूको रामराज आ रहा है पृ. क्रं. 21
5) प्रकाश त्रिभुवन – 'रूको रूको रामराज आ रहा है प्रृ. क्रं. 22
6) प्रकाश त्रिभुवन – 'रूको रूको रामराज आ रहा है पृ. क्रं. 23
7) प्रकाश त्रिभुवन – 'रूको रूको रामराज आ रहा है प्रृ. क्रं. 25
8) प्रकाश त्रिभुवन – 'रूको रूको रामराज आ रहा है पृ. क्रं. 35